

Empowerment of Couples

Rationale

Marriage is a sacred union of two unknown individuals, who come together, live together and grow together. They have the blessings of Bhagwan Mahavira. Though they are made in heaven, they are solemnized on earth. Then why is it that after marriage some couples cannot live together happily, there are tensions between husband and wife, between the daughter-in-law and mother-in-law and sometimes with the father-in-law also. Our society is becoming plagued with unhappy home. This is becoming a burning issue among young married couples, not only amongst the jain community but in all communities across the world. A survey was carried out and feelings of a large number of newly married couples were recorded, a need analysis was done and found that certain issues and areas which need to be addressed urgently for the harmony of Indian Family and Indian Society. The areas are

1. Lack of understanding
2. No acceptance of changed environment
3. High and unrealistic expectations
4. Reluctance to compromise
5. Difficulties in adjustment.
6. Unfulfilled commitments
7. Unaware and unprepared to manage pressures after marriage
8. Disrespect
9. Unwarranted interference by girls parents
10. Lack of quality time that couples get to spend with each other
11. Lack of meaningful communication
12. Comparison (before & after marriage): Freedom before marriage and responsibilities after marriage

The program is aimed at

This program brings happiness in the married life and helps the couple in understanding the following issues of married life.

1. Acceptance of changed environment both for the wife and the family members.
2. Expectations from each other
3. Adjustments to be done in married life
4. Giving time and space to each other.
5. Compromises to be made in married life
6. Importance of open communication
7. Importance of Patience, ego and tolerance in married life.
8. Sacrifices in married life.

Salient features of the program

1. The program is conducted in 12 sessions of 2 hrs each.
2. Two sessions are taken every week.
3. Attendance to all sessions is a must.
4. Couples married for 5 years or less can join.
5. All sessions are interactive with lot of activities and participation.
6. The details of each sessions are as follows laws.

No	Participants	No of sessions
1	Husband & Wife, Father & Mother in Law	2
2	Wife	6
3	Husband	1
4	Mother in Law	1
5	Husband and wife	1
6	Husband, Father & Mother in Law	1

The Program benefits :

The Candidates

- It helps to bring the couple more closer and increase their communication.
- It helps the couples to understand that we all are different and that we need to respect each other.
- It makes the couples to share all the responsibilities together.
- It also makes the husband realize that it is his responsibility to make the wife comfortable in the new home.
- This course increases the communication between all members.
- This also emphasizes that the new bahu is now the part of our family.

The Family

- Greater communication amongst family members.
- Giving time and space to understand the new environment and each others.
- Caring and sharing amongst members.
- Willingly Sacrificing and responsibility sharing

The Society

This program helps to preserve the concept of Family in Indian Society which in the past 20 to 30 years has shown greater fragility and break ups.

For Further Details Contact:

Dr. Sunil Bhutada: 094210 18554

Sonshree Pohare : 088050 14134

Bharatiya Jain Sanghatana, Pune

Level 8, Muttha Chambers II, Senapati Bapat Marg, Pune - 411016

Tel: 020-6605 0000 Fax: 020-6605 0011 Email: info@fjei.org Website : www.bjsindia.org

युगलों का सक्षमीकरण

मूलाधार

विवाह दो अंजान व्यक्तियों का पवित्र मिलन है, जो एक साथ आते हैं, एक साथ रहते हैं, और एक साथ प्रगति करते हैं। यह भगवान महावीर का आशीर्वाद है। हालांकि जिन्हें स्वर्ग में ही एक दूसरे के लिए बनाया जाता है और एक साथ सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए धरती पर भेजा जाता है फिर क्यों कुछ युगल विवाह के बाद एक साथ खुशी से नहीं रह सकते हैं? पति व पत्नी के बीच, बहू व सास के बीच, और कभी-कभी ससुर के साथ भी आपसी तनाव रहते हैं। हमारे समाज में भी नाखुश परिवारों की महामारी फैल रही है। यह नये विवाहित युगलों के बीच एक ज्वलंत समस्या बन रही है। न केवल जैन समुदाय की बल्कि दुनिया भर के समुदायों की यह बहुत बड़ी समस्या है। नवविवाहित युगलों के बीच एक सर्वेक्षण किया गया था जिसमें बड़ी संख्या में युगलों की भावनाएँ दर्ज की गयीं। एक आवश्यकता आधारित विश्लेषण किया गया और यह पाया गया कि कुछ मुद्दे और क्षेत्र ऐसे हैं जिन पर तुरंत कार्य करने की जरूरत है जिससे भारतीय परिवारों व भारतीय समाज की सद्भावना को बचाया जा सके। वे क्षेत्र निम्नलिखित हैं।

- समझ का अभाव
- बदले हुए माहौल को स्वीकार नहीं करना
- उच्च एवं अवास्तविक उम्मीदें
- समझौता करने के लिए अनिच्छा
- समायोजन करने में कठिनाईयाँ
- अधूरे वादे
- विवाह के बाद आने वाले दबावों का प्रबंधन करने हेतु अनजान व तैयार नहीं
- अनादर
- लड़कियों के माता पिता द्वारा अनुचित हस्तक्षेप
- युगलों द्वारा एक दूसरे के साथ बिताये जाने वाले गुणात्मक समय का अभाव
- सार्थक संवाद/ बातचीत का अभाव
- तुलना: (विवाह के पहले व बाद) विवाह के पहले स्वतंत्रता और विवाह के बाद जिम्मेदारियाँ

कार्यक्रम का उद्देश्य है—

यह कार्यक्रम विवाहित जीवन में खुशियाँ लाता है और युगलों को विवाहित जीवन के निम्नलिखित मुद्दों को समझने में मदद मिलती है:

- पत्नी एवं परिवार के सदस्यों, दोनों के लिए बदले हुए माहौल की स्वीकृति
- एक दूसरे से उम्मीदें
- विवाहित जीवन में किये जाने वाले समायोजन
- एक दूसरे के लिए समय व स्थान
- विवाहित जीवन में किये जाने वाले समझौते
- खुली बातचीत का महत्व
- धैर्य, अहंकार व विवाहित जीवन में सहनशीलता का महत्व
- विवाहित जीवन में त्याग/ बलिदान

कार्यक्रम की मुख्य विशेषता:

- कार्यक्रम १२ सत्रों में आयोजित किया जाता है प्रत्येक सत्र २ घंटे का है।
- प्रत्येक सप्ताह में दो सत्र लिये जा रहे हैं।

- सभी सत्रों में उपस्थिति अनिवार्य है।
- जिन युगलों का विवाह ५ वर्ष या उससे कम अवधि का है वे भाग ले सकते हैं।
- पतियों के लिए ५ सत्र।
- ससुरालवालों के लिए ४ सत्र
- सभी सत्र बहुत सारी गतिविधियों एवं भागीदारी के साथ ही बातचीत आधारित है।
- प्रत्येक सत्रों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.	प्रतिभागी	सत्रों की संख्या
१	पति और पत्नी, सास व ससुर	२
२	पत्नी	६
३	पति	१
४	सास	१
५	पति और पत्नी	१
६	पति, सास व ससुर	१

कार्यक्रम के लाभ:

उम्मीदवारों को:

- यह युगलों को कुछ और करीब लाता है एवं उनके आपसी संवाद/ बातचीत में वृद्धि करता है।
- यह युगलों में इस बात को समझने में मदद करता है कि हम सब अलग-अलग हैं अतः हमें एक-दूसरे का सम्मान/ आदर करने की जरूरत है।
- यह युगलों को सभी जिम्मेदारियों को आपस में बाँटना सिखाता है।
- यह पति को इस बात का भी एहसास कराता है कि यह उसकी स्वयं की जिम्मेदारी है कि उसकी पत्नी नये घर में सुखपूर्वक रहे।
- यह कोर्स सभी सदस्यों के बीच संवाद/ बातचीत में बढ़ोत्तरी करता है।
- यह इस बात पर भी जोर देता है कि नयी बहू अब हमारे घर का हिस्सा है।

परिवार:

- परिवार के सदस्यों के बीच अधिक संवाद
- एक दूसरे को व नये माहौल को समझने का समय व स्थान देते हैं।
- सदस्यों के बीच देखभाल व साझापन
- स्वेच्छा से त्याग और जिम्मेदारी बाँटना

समाज:

- यह कार्यक्रम भारतीय समाज में परिवार की अवधारणा को बचाये रखने में मदद करता है जिसमें पिछले २० से ३० वर्षों में ज्यादा कमजोरी व टूटन दिखायी दे रही है।

संपर्क:

डॉ. सुनील भूतडा — ०९४२१० १८५५४

सोनश्री पोहरे — ०८८०५० १४१३४

भारतीय जैन संघटना, पुणे

मुस्था चेंबर्स २, ८वीं मंजिल, १०६/ १-ए, सेनापति बापट रोड, पुणे— ४११०१६

टेलीफोन: २०-६६०५-००००, फेक्स: २०-६६०५-००११ Email: info@fjei.org Website : www.bjsindia.org